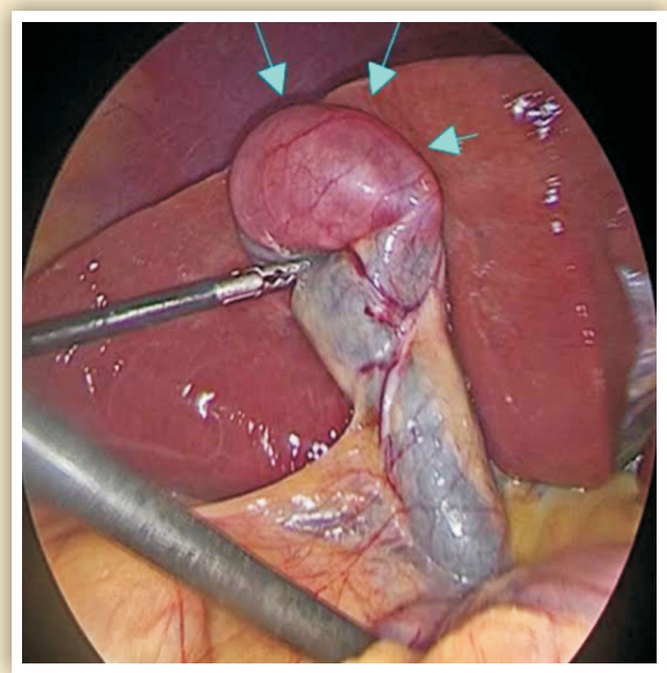

(2) दूरबीन विधि द्वारा ऑपरेशन : दूरबीन द्वारा पित्त की थैली के ऑपरेशन को लैप्रोस्कोपिक कोलिसिस्टेक्टमी कहते हैं। इसमें सर्जन एक सेमी के चीरे से पेट में दूरबीन डालते हैं जिसमें पूरे पेट के अन्दर की संरचना टी०वी० पर दिखाई देती है। टी०वी० पर देखते हुए आधे-आधे सेमी के चीरे द्वारा बाकी ऑपरेशन करके एक सेमी के छेछ से पेट से बाहर निकाल दिया जाता है।

प्रश्न : दूरबीन द्वारा ऑपरेशन से क्या फायदे हैं?

उत्तर : (1) यह ऑपरेशन बहुत छोटे चीरे से किया जाता है इसमें माँसपेशियों को काटने की जरूरत नहीं पड़ती है। इस वजह से मरीज को ऑपरेशन के बाद बहुत कम दर्द होता है।

(2) मरीज ऑपरेशन के तीन घण्टे बाद ही पानी पी सकता है और अगले दिन से सब कुछ खा पी सकता है।

(3) मरीज ऑपरेशन के अगले दिन ही चलने फिरने लगता है।

(4) मरीज के ऑपरेशन के अगले दिनल ही छुट्टी कर दी जाती है।

(5) इस ऑपरेशन में घाव पकने के चान्स बहुत कम होते हैं।

(6) ऑपरेशन का दाग बहुत हल्का होता है या न के बराबर होता है।

प्रश्न : क्या यह ऑपरेशन बहुत महँगा है?

उत्तर : बिल्कुल नहीं! जिस रेट में चीरे द्वारा ऑपरेशन होता है लगभग उसी रेट में दूरबीन द्वारा भी होता है। इस ऑपरेशन के बाद मरीज को दवाई भी कम खानी पड़ती है। चीरे द्वारा ऑपरेशन में मरीज तीन महीने तक आराम करता है, काम नहीं कर पाता, व्यवसाय नहीं कर पाता, जबकि दूरबीन विधि द्वारा ऑपरेशन के 10 दिन बाद मरीज सारे काम कर सकता है। जैसे ऑफिस जाना, दुकान चलाना, ठेलिया लगाना इत्यादि।

प्रश्न : मरीज ऑपरेशन के कितने दिन बाद काम कर सकता है?

उत्तर : दूरबीन द्वारा ऑपरेशन से सबसे बड़ा फायदा गरीब मरीजों को होता है, (जो रोज कमाता है, रोज खाता है) इस ऑपरेशन के 7 दिन बाद हल्का काम करना और 10 दिन बाद सारे काम कर सकता है।

प्रश्न : क्या दूरबीन द्वारा ऑपरेशन से पथरी छूट जाती है?

उत्तर : बिल्कुल नहीं! यह उन लोगों द्वारा फैलायी हुई भ्रांति है जिन्हें दूरबीन द्वारा ऑपरेशन करना नहीं आता, इस ऑपरेशन में चूंकि पूरी पित्त की थैली ही निकाल दी जाती है, जिससे न तो पथरी छूटने का डर होता है और न ही दोबारा बनने का डर होता है।

प्रश्न : क्या पित्त की थैली निकाल देने से मरीज को कोई नुकसान होता है।

उत्तर : जब पथरी से भरी हुई पित्त की थैली को ऑपरेशन से निकाल दिया जाता है तब पित्त लीवर से सीधे आँत में जाता रहता है और भोजन पचाने में पहले की तरह की मदद करता है और आदमी पूरी जिन्दगी नार्मल जीता है।

प्रश्न : सुगर के मरीजों में दूरबीन द्वारा क्या फायदा है?

उत्तर : चीरे द्वारा ऑपरेशन करने पर सुगर के मरीजों में घाव देर से भरता है और अक्सर घाव पक जाता है जबकि दूरबीन द्वारा ऑपरेशन छोटे चीरे से होने की वजह से घाव पकने का डर न के बराबर होते हैं।

प्रश्न : मोटे आदमियों में दूरबीन द्वारा ऑपरेशन से क्या फायदे हैं?

उत्तर : साधारण आदमी की तुलना में मोटे आदमियों में चीरे द्वारा ऑपरेशन करने पर बहुत बड़ा चीरा देना पड़ता है जिससे आदमी को ज्यादा दर्द होता है जबकि दूरबीन द्वारा छोटे चीरे से ही पूरा ऑपरेशन हो जाता है और आदमी बहुत जल्दी काम पर लौट आता है।

उपलब्ध सुविधायें

- सभी ऑपरेशन दूरबीन विधि द्वारा जैसे-सभी प्रकार की पथरी, बच्चेदानी का ट्यूमर, हार्निया, बवासीर, फिस्टुला (भगन्दर), एनल, फिशर, अपेन्डिक्स
- फिजियोथिरेपी की सुविधा

ANUPRIYA CLINIC

AND HEALTH CARE CENTER

Address :
C-1/346 Secotor-H, L.D.A. Colony,
Near Aashiana Chauraha, (निकट बेईमान लड्डू), Lucknow

पित्त कैसे बनता है और इसका क्या काम है :

हमारे शरीर में पित्त लीवर में बनता है जो पित्त की थैली में आकर इकट्ठा होता रहता है, जब हम भोजन करते हैं, तब पित्त की थैली से पित्त निकलकर आँत में जाता है और भोजन में तेल या घी वाले तत्व पचाने में मदद करता है।

पथरी बनने के क्या कारण हो सकते हैं :

(1) पित्त की थैली में इन्फेक्शन होना।
(2) रक्त में रसायनों का असंतुलन होना।
(3) पित्त के बहाव में रूकावट होना।
(4) पित्त की थैली में एक पथरी से लेकर 200-300 तक पथरी हो सकती है और यह किसी भी साइज (1 मिमी-3 सेमी तक) की हो सकती है।

पथरी किन लोगों में ज्यादा बनती है :

(1) मोटे लोगों में।
(2) औरतों में।
(3) चालीस साल से ज्यादा उम्र के लोगों में।
(4) अधिक घी-तेल खाने वाले लोगों में।

पथरी द्वारा क्या परेशानी हो सकती है :

मरीज के पेट के ऊपरी भाग में दर्द होना, कच्ची डकार आना, खाना न पचना, जी मचलाना, बुखार आना।

यदि पित्त की थैली में पथरी का इलाज न कराया जाय, तो क्या समस्या हो सकती है :

(1) पित्त की थैली में मवाद बनना।
(2) पीलिया होना।
(3) पित्त की थैली का सड़ के फट जाना।
(4) पित्त की थैली आँत के बीच में छेद हो जाना। (फिस्टुला)
(5) पित्त की थैली में कैंसर होना।
(6) फैक्रिपाटमटिस (अग्याशय) का इन्फेक्शन होना।

पित्त की थैली में पथरी का पता कैसे लगाया जाता है :

(1) बीमारी के लक्षण द्वारा : पेट के दाहिने ऊपरी भाग में दर्द होना, जी मचलाना, पेट का भारीपन।
(2) अल्ट्रासाउण्ड द्वारा।

इलाज

पित्त की थैली में पथरी का इलाज सिर्फ ऑपरेशन द्वारा ही सम्भव है, यह सब भ्रान्तियाँ हैं कि पित्त की थैली की पथरी दवा द्वारा या मन्दिर में पुजारियों द्वारा गारन्टी के साथ सम्भव है। हमारे देश में आज भी लोग नीम हकीम और अन्ध-विश्वास के चक्कर में पथरी का इलाज मन्दिर के पुजारियों द्वारा कराते रहते हैं। वह आपके आँखों के सामने हाथ की सफाई द्वारा पथरी निकाल कर दिखाते हैं जो सम्भव नहीं है। इन मरीजों का यदि आप अल्ट्रासाउण्ड करायें तो आप पहले की तरह ही पित्त की थैली में पथरी पायेंगे, इन पुजारियों के चक्कर के पड़कर ढ़ेर सारे मरीजों में पित्त की थैली में कैंसर बन जाता है या पीलिया हो जाता है और तब डॉक्टर भी कुछ नहीं कर पाते। इसके बहुत सारे प्रमाण हैं।

ऑपरेशन विधि

(1) चीरे द्वारा : (अ) बड़े चीरे द्वारा
(ब) छोटे चीरे द्वारा (मिनी कोलिसिस्टेक्टमी)